REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 10 | JULY - 2018

'तौलिये' में व्यक्त पारिवारिक जीवन में वर्ग संघर्ष

डॉ. अमोल विठ्ठल पालकर
स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
बलभीम महाविद्यालय,बीड .

प्रस्तावना :

उपेन्द्रनाथ अश्क श्रेष्ठ कथाकार के साथ-साथ श्रेष्ठ नाटककार भी है | उनके नाटक वास्तविकता को स्पर्श करते हुए पाठकों का ध्यान यथार्थ की ओर खिंच लेते हैं | अश्क जी ने लकीर के फ़क़ीर न बनकर अपने नाटकों को बिल्कुल अधुनातन धरातल पर प्रस्तुत किया है | 'तौलिये' नाटक स्वभाव की भिन्नता और वर्ग संघर्ष के दुहरे धरातल पर चलता है | साथ ही एक विशिष्ट वर्ग के अहम् को भी उजागर करता है| |

नाटक की नायिका मधु एक विशिष्ट वर्ग में पली-बढ़ी है | अभिजात्य वर्ग के संस्कार उस पर हुए है | | उसके सर पर सफाई की सनक सवार है और वह एक विशिष्ट हद से बाहर जा चुकी है | इस कारण मध्यवर्गीय परिवार में पला हुआ उसका पति उब जाता है और क्रोध में उसे छोड़कर चला जाता है | इसी बीच मधु अपनी आदत को ठीक करने और अपने आप को पति के अनुरूप ढालने का प्रयास करती है | लेकिन जब पति अचानक वापस लौटता है तो उसे एहसास होता है कि पति उस पर बिल्कुल नाराज नहीं है | उस पर फिर सनक हाबी हो जाती है | नाटक के अंत में पुराने झगड़े की पुनरावृत्ति होती है | इसी को लेकर अश्क अश्क जी ने नाटक के कथानक का संयोजन किया है |

कथानक की घटनाओं में महत्वपूर्ण बात सामायिक यथार्थ की है | सफाई की सनक एक कारण मात्र है | दोनों पति-पत्नी का संघर्ष केवल दो विरोधी स्वभावों का नहीं बल्कि दो विरोधी सामाजिक संस्कारों तथा दृष्टिकोणों का है | मधु अभिजात्य वर्ग की लड़की है | उसे तमीज़, तहजीब़, अनुशासन सफाई के नाम पर सबकुछ सिखाया गया है | इसी कारण मधु एक विशिष्ट ऐनक लगाकर ही पति की ओर देखती है | वसंत कहता भी है "तुम्हारा वातावरण मेरे वातावरण से घृणा करता है ...तुम आदमी की सहज भावनाओं को निर्मम वर्जनाओं की बेड़ियों में ऐसी बांधकर रखना चाहती हो कि उसकी रूह ही मर जाय |"[1] वसंत के वक्तव्य से ज्ञात होता है कि समाज का अभिजात्य वर्ग हमेशा दूसरे वर्ग को मूर्ख, गँवार और असभ्य समझता है | जब तक यह वर्ग भेद बना रहेगा तब तक यह संघर्ष जारी रहेगा | इसतरह नाटक स्वभाव की भिन्नता और वर्ग संघर्ष को अत्यंत सफाई से स्पष्ट करता है |

मधु और वसंत के घर की यह कहानी है | मधु एक विशिष्ट अभिजात वर्ग में पली और उन संस्कारों को विशिष्टतापूर्वक अर्जित किए हुए है | उसे सफाई पसंद है लेकिन उसने सफाई की सनक को एक हद से

बाहर ओढ़ रखा है | वसंत मध्य वर्ग में पला गृहस्थ है | वैसे वसंत भी सफाई का कायल है | परंतु सफाई के लिए दूसरों की भावनाओं को कुचल देना उसे पसंद नहीं है | इसी सफाई की सनक को लेकर संघर्ष प्रारंभ होता है | वसंत मदन के तौलिये से मुँह पोछता है तो मधु उखड जाती है | सफाई के नाम पर औरों को मूर्ख और अभ्यस्त समझना उनकी हँसी उड़ाना अभिजात्य वर्ग की आदत-सी बन गई है | वसंत कहता है, "तुम्हारी नफरत तुम्हारा क्रोध तुम्हारी सारी भावनाएँ तुम्हारे चेहरे पर झलक आती है |"

वस्तुतः मधु एरिस्टोफेटीक वातावरण में पली है | वसंत के घर तो एक तौलिया था जिससे वे छह भाई काम लेते थे | लेकिन मधु का कहना है इससे त्वचा रोग फ़ैल जाता है | उस वक्त वसंत खीज से कहता है "रोग इस तरह से नहीं बढ़ता है, रोग बढ़ता है कमजोरी से |"[2]फिर वह उसे चूहा सैदल शाह की कथा बताता है | वहाँ के लोग जोहड़ का मैला चिकट पानी पीकर भी तंदुरुस्त थे क्योंकि बीमारी का मुकाबला नजाकतों से नहीं होता बल्कि शरीर में ऐसी शक्ति पैदा न करने से होता है जो रोग के आक्रमण का प्रतिकार न कर सके |

वसंत को अभिजात्य वर्ग में पले औरों को असभ्य और गंदे समझनेवाले लोगों से चिढ़ हैं | एक बार मधु के मामा और मौसा विलायत से आए थे | मौसा ने हाथ धोये तो वसंत ने तौलिया पेश कर दिया परन्तु उन्होंने कहा "मैं किसी दूसरे के तौलिए से हाथ नहीं पोछता |"[3] कहकर अपने ही रुमाल से हाथ पोंछ लिए एक बार मधु के मामा के संबंध में भी यही बात हुई | एक दिन उनके ही घर वसंत गया था | वसंत ने उनके ही ब्लेड से सेव किया तो मौसा ने उनके ही सम्मुख ब्लेड लोन में फेंक दिया और रेसर को स्टेलिराइज करवा दिया | वसंत को ऐसे वातावरण में पले लोगों से सकत नफरत हुई है क्योंकि इन लोगों की अरुचि में घृणा की भावना काम करती है | साथ ही ये लोग सभ्यता, संस्कृति और अरुचि के नाम पर अपनी और अपने संपर्क में आए लोगों की जिंदगी हराम कर देते हैं | इसलिए वसंत कहता है, "जो आदमी जी भर खा पी नहीं सकता है हँस-हँसा नहीं सकता वह जिंदगी में कर ही क्या सकता है | दुख और मुसीबतों के बंधन ही क्या कम हैं, जो जिंदगी को शिष्टाचार की बेड़ियों से जकड दिया जाए | यह न करो वह न करो ऐसे न बोलो वैसे न बोलो, यों न बैठो वों न बैठो- इन वर्जनाओं का कही अंत भी हैं |"[4] आदमी की सहज भावनाओं को निर्मम बेड़ियों में बांधना यानि उसकी रूह को मार देने समान है | मधु जिस वर्ग में पली है वह वर्ग और उसके संस्कार मध्य वर्ग के लोगों से घृणा ही करते हैं | इसी कारण वसंत मधु को, केवल मधु को नहीं बल्कि वो जिस वातावरण संस्कार और वर्ग में पली है उन सबको फटकारती है | आखिर मधु घर छोड़ जाने के लिए तत्पर होती है लेकिन तभी वसंत को साहब द्वारा बनारस जाने का आदेश मिलता है और वसंत बनारस चला जाता है |

इसके बाद दूसरे दृश में हम मधु को दो महीने बाद देख लेते हैं तो मधु में कुछ परिवर्तन नजर आता है | मधु अपनी सहेली से कहती है कि आदमी की बुनियादी प्रवृत्तियों पर नित्य नए दिन चढ़ते जानेवाले पर्दों का नाम ही तो संस्कृति है और रही सुरुचि तो यह भी अभिजात वर्ग की स्नोबी का दूसरा नाम है | वो मानने लगी है कि आदमी सीमाओं को चूता हुआ न चले परंतु मध्यम मार्ग अपनाएं | वो न इतना खुले की बर्बर दिखाई दे और न इतना बंधे कि सनकी बने | मधु की इन नई बातों से उसकी सहेलियाँ चिंती और सुरु चकित रह जाती है | उनके चले जाने पर मधु मंगला से पूछती है कि सहेलियों के कहने के अनुसार क्या वो सचमुच बदल गई है | अब वह स्वयं औपचारिकता और सफाई की सनक से मुक्त हो जाना चाहती है लेकिन आखिर वो कबूल करती है "बचन से जो संस्कार मैंने पाए है उनसे मुक्ति पाना मेरे लिए उतना आसान नहीं है

है |"[5] परंतु समझते है कि मधु उनसे, उनके स्वभाव से, उनके वातावरण से नफरत करती है | अतः मधु स्वयं को बदलने का निर्णय लेता है |

अचानक ही एक दिन वसंत वापस लौटता है | मधु में और पूरे घर में हुआ परिवर्तन देखकर वो दंग रह जाता हैं | वह ख़ुशी से झूम उठता है और कहता है- "अब तुम जिन्दगी का राज समझ पाई हो, सफल जीवन का भेद बाहरी तड़क भड़क में नहीं अंतर की दृढ़ता में हे |"[6] तत्पश्यात वसंत हाथ-मुँह धोने के लिए जाता है परंतु उसी तौलिये से मुँह पोंछता है जिसे सूरो और चिंती ने इस्तेमाल किया था | केवल इसी बात को लेकर मधु फिर उखड पड़ती है और तौलिये को लेकर वाही संघर्ष जारी रहता है |

प्रस्तुत एकांकी का कथानक दूहरे स्तर पर काम करता है | एक ओर संघर्ष पति पत्नी की स्वभाव भिन्नता पर आधारित है और यही स्वभाव भिन्नता घर की अस्वस्थता का कारण बन जाती है | यह संघर्ष दूसरे स्तर पर वर्ग भेद को लेकर चलता है | समाज का अभिजात्य वर्ग हमेशा दूसरों को हेय और तुच्छ मानता है | दूसरों की भावनाओं को निर्ममता से पैरों तले कुचल देता है | मधु अभिजात्य वर्ग की है तो वसंत मध्य वर्ग का | इस वर्ग भिन्नता के कारण यह संघर्ष जारी रहता है | लेखक ने यहाँ घर-घर की कहानी अत्यंत कुशलता से चित्रित कर उसे व्यापकतम रूप दिया है | उत्कृष्ट, कौशलपूर्ण एवं सहज स्वाभाविक संवाद, संवाद, संकलनत्रय की सफलता तथा प्रतिपाद्य की दृष्टि से 'तौलिये' एक सफल एकांकी नाटक है |

संदर्भ ग्रंथ सूचि

1. उपेन्द्रनाथ अश्क, तौलिये,पृ. 73
2. वहीं, पृ. 69
3. वहीं, पृ. 70
4. वहीं, पृ. 72
5. वहीं, पृ. 80
6. वहीं, पृ. 81